आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

भू-ज्योतिष

प्रथम बार ज्योतिष शास्त्र में पृथ्वी ग्रह का समावेश
व दश ग्रहों के प्रभाव का वर्णन

भू-ज्योतिष

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-81-19927-70-8

Price: ₹480.00

The aim of this book is not to criticize, insult, oppress and dominate any present/modern knowledge or studies or culture or believes. Any such issue arises is entirely a misunderstanding of one, who claiming so and either writer, writer or/and Educreation does not hold any responsibility and is not responsible for any such issues arises.
The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts ofPublisher Readers are requested to use their intelligence and knowledge while reading and understanding contents of this book. writer or/and Educreation does not hold any responsibility and is not responsible for any social, political, cultural, economic, commercial, national, international, educational or other problems or/and conflicts raised because of reading this book, using , implementing facts, formulas and other things given in this book, in any way or whatsoever.

Printed in India

भू-ज्योतिष

विश्व में प्रथम बार ज्योतिष शास्त्र में पृथ्वी ग्रह
सहित दस ग्रहों का समावेश

लेखक

आचार्य–रज्जन प्रसाद पटैल

स्योना पृथ्वी भवानृक्षरा निवेशनि।
यच्छा न शर्म सप्रथः।

हे पृथ्वी, आप सुख देने वाली, बाधा हरने वाली
और उत्तम वास देने वाली हैं,
हम सभी को उत्तम वास और सुख प्रदान करें।

लेखक का परिचय

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

बी. एस. सी. (बायो), एम.ए.(अग्रेंजी. साहित्य)
ज्योतिष मर्मज्ञ उपाधि व गोल्ड मेडेलिस्ट,
एक्युप्रेशर, सुजोक, चाइनीज व जर्मन
एक्युप्रेशर उपचारक व रैकी मास्टर
पता– विवेकानन्द नगर एम.आई.जी.–4,
सेंट्रल स्कूल के पीछे, दमोह म.प्र. (भारत)
मो- 09300694736, 08109442751
ई.मेल – astro.rppatel@gmail.com
वेबसाईट - www.bhoojyotish.com
www.bhoodharam.com

जीवन परिचय

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल का जन्म 15 सितम्बर 1973 में म.प्र. दमोह जिले के एक छोटे से ग्राम कनारी में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गाँवों में ही प्राप्त की एवम् उच्च शिक्षा बी.एस सी.(बायो) व एम.ए. (अंग्रेजी) दमोह शहर प्राप्त कर जिज्ञाशु, खोजी व समाज सेवा की प्रवृत्ति के कारण 1997 में जबलपुर म.प्र से एक्युप्रेसर व चुम्बक उपचार प्रशिक्षण प्राप्त कर, दमोह शहर में एक्युप्रेसर व चुम्बक उपचार सेवा प्रारम्भ की, इसी बीच 1 दिसम्बर 1998 कलकत्ता में आयोजित अंतरराष्ट्रीय वैकल्पिक उपचार सम्मेलन में अच्छी सेवाओं के लिए गोल्ड मेडल से सम्मानित हुये।

मानव सेवा व अध्ययन क्रम में भारत के विभिन्न शहरों में आयोजित एक्युप्रेसर प्रशिक्षण प्राप्त किये व जापानी उपचार पद्धति रेकी में मास्टरशिप की डिग्री प्राप्त

की एवं चायनीज एक्युप्रेसर के महत्वपूर्ण विषय टाइम एक्युपंचर से प्रभावित होने के कारण और उपचार के साथ–साथ परभौतिक ज्ञान में रूचि, विभिन्न जिज्ञासाओं के समाधान के लिए, भारतीय प्राचीन ज्योतिष विषय पर गहन अध्ययन प्रारंभ किया एवं कम समय में ही ज्योतिष विषय की महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर अध्ययन मनन कर लेख लिखना प्रारंभ किया।

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली की मासिक पत्रिका फ्यूचर समाचार की ओर से चार बार ज्योतिष मर्मज्ञ उपाधि से सम्मान प्राप्त हुआ। विषय 1– जन्मकुण्डली में संतान योग, संतान में बाधा और उपाय, 2–जन्मकुण्डली में कैंसर योग, 3– जन्मकुण्डली में मांगलिक दोष परिक्षण, मांगलिक कुण्डली का मांगलिक व अमांगलिक कुण्डली से मिलान कब व कैसे संभव, 4– जन्मकुण्डली में जन्मकुण्डली में विवाह और प्रेम विवाह योग, विवाह में देरी के कारण और उपाय।

इसके अतिरिक्त 1– जन्मकुण्डली में बहुसंबंध व बहुविवाह योग, 2– जन्मकुण्डली में व्यवसाय या नौकरी योग और 3– जन्मकुण्डली और आधुनिक मेडिकल साईंस के आधार पर संतान योग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर राष्ट्रीय ज्योतिष महासम्मेलनों में शोधपत्र वाचन के फलस्वरूप सम्मानित हो चुके हैं, उक्त विषयों पर शोध लेख ज्योतिष रिसर्च पत्रिका में छप चुके हैं।

सितम्बर 2009 अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली से सम्बद्धता व मान्यता प्राप्त कर दमोह शहर में स्वयं की संस्था सिद्धिविनायक ज्योतिष प्रशिक्षण, परामर्श व अनुसंधान केंद्र प्रारम्भ कर लगातार छः वर्षों से ज्योतिष ज्ञान का प्रचार, प्रसार और लोगों की समस्याओं का निदान और समाधान कार्य कर रहें है। ज्योतिष शास्त्र

जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अध्ययन एवं अनुसंधान जारी है। इसी क्रम में अभी तक चार पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो चुका है। 1–भू–ज्योतिष, 2–भू–ज्योतिष भाग एक, 3–ज्योतिष विज्ञान या अन्धविश्वास, 4– भू–धर्म एवं विश्वबंधुत्व का उदय, इसी क्रम में, यह पुस्तक भू–ज्योतिष आपके समक्ष है।

विषय–सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
	लेखक का परिचय	v
	पृथ्वी सूक्त	xi
	सत्यम, शिवम्, सुंदरम	viiii
	सत्य सदैव कड़वा होता है।	xv
	भू–ज्योतिष (भाग–1)	
1.	ज्योतिष क्या है ?	1
2.	पँचांग	3
3.	नक्षत्र	4
4.	तिथि	9
5.	योग	12
6.	करण	14
7.	वार या दिन	17
8.	जन्मकुण्डली क्या है ?	18
9.	लग्न व भाव	20
10.	बारह राशियाँ व संबंधित गुणधर्म	24
11.	प्राचीन ज्योतिष के सूत्र	32
12.	नव ग्रह कारक	32
13.	जन्मकुण्डली में मंगल दोष	34
14.	नवग्रहों ग्रहों से संबंधित गुणधर्म	42
15.	लग्नकुडण्ली व बारह भाव	75
16.	जन्मपत्री के बारह भावों के अनुसार सामान्य फल	79
17.	फलादेश संबंधी विशेष नियम	131
18.	विंशौत्तरी दशाफल	160
19.	ज्योतिष एवं नवग्रह उपाय	182
20.	रत्नों के प्रकार	183
21.	रत्न धारण विधि	191

22.	नवग्रहों से संबंधित दान	198
23.	रंगों से करें नवग्रह संतुलन	200
24.	नवग्रह उपाय व लाल किताब	203
	भू–ज्योतिष (भाग–2)	
25.	जन्मकुण्डली का कैसे अध्ययन करें	207
26.	ग्रहों के योग	212
27.	नक्षत्र मंडल,राशि मंडल व नवग्रह पथ चित्र	227
28.	ज्योतिष में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न	229
29.	जन्मकुण्डली में पृथ्वी ग्रह व बारह भावों का निरुपण	230
30.	भू–ज्योतिष जन्मकुण्डली गणित	235
31.	भू–ज्योतिष एवं जन्मकुण्डली के बारह भाव	251
32.	भू–ज्योतिष व वास्तु	290
33.	पंचतत्व एवं वास्तु	303
34.	अष्टदिशाओं के अनुसार वास्तु सम्मत निर्माण	318
35.	पदार्थ व ऊर्जा	321
36.	पृथ्वी ग्रह पर ही जीवन संभव	325
37.	उत्प्रेरक व एंजाइम सिद्धान्त	328
38.	मौसम, ऋतुयें, जलवायु एवं ज्योतिष	333
39.	भू–ज्योतिष, लग्न व लग्न कुण्डली	335
40.	भू–ज्योतिष एवं नवग्रह उपाय	338
41.	लाल किताब ज्योतिष	342
42.	माँ का प्रभाव सर्वाधिक	347
43.	भू–ज्योतिष व मुहुर्त ज्ञान	351
44.	समान का समान के ऊपर प्रभाव	353
45.	भू–ज्योतिष और मानसून	355
46.	भू–ज्योतिष और मानव कर्म प्रभाव	359
47.	भू–ज्योतिष व आदिवासी लोग	362
48.	प्रतीकात्मक ज्योतिष एवं भू–ज्योतिष	366
49.	प्राचीन वेदों में ज्योतिष का वर्णन	371

50.	जगत पिता सूर्य देव से प्रार्थना	374
51.	माँ पृथ्वी से प्रार्थना	375
52.	नक्षत्रों से प्रार्थना	376
53.	भूमि सूक्तम	378
54.	भू–ज्योतिष व पंच तत्व सिद्धान्त	402
55.	भू–ज्योतिष व कर्म सिद्धान्त	405
56.	जन्म कुण्डली रहस्य व भू–ज्योतिष	409
57.	सात वार व भू या पृथ्वी वार	411
58.	प्राचीन आयुर्वेद व औषधि चयन विधि	414
59.	भू–ज्योतिष की आवश्कयता क्यों ?	418
60.	भू–ज्योतिष से क्या लाभ	423
61.	मानव जीवन चक्र	424
62.	ऊर्जा सिद्धान्त	426
63.	विश्व पृथ्वी दिवस	433
64.	पृथ्वी दिवस व हमारा भारत	435
65.	ईश्वर	438
66.	पृथ्वी ग्रह का सम्मान व पूजा आवश्यक है?	439
67.	भू–ज्योतिष से क्या लाभ होगा?	442
68.	भू–ज्योतिष एक समस्त विश्व से आह्वान	444
69.	उपसंहार	445
70.	दस ग्रह शांति मंत्र	448
71.	दस ग्रह स्त्रोत	449

पृथ्वी सूक्त

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः।।

जिस भूमि के ऊपर धूल शिला खंड और पत्थर है, जिसके भीतर स्वर्ण रत्नादि अमूल्य खनिज पदार्थ है, उस धरती माँ को हम नमन करते है।

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या धुव्रास्तिष्ठन्ति विश्वहा।
पृथिवीं विश्वधासं धृतामच्छावदामसि।।

जिस भूमि में वृक्ष वनस्पति और लता आदि स्थिर रहते है, जो वृक्ष–लतादि औषधिरूप में सबकी सेवा सम्पन्न करती है, ऐसी वनस्पतिधारिणी, धर्मधरिणी और सर्वपालनकत्रीं धरती माँ की हम शीश झुकाकर स्तुति करते है।

ग्रीश्मस्ते भूमे वार्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतुवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम्।।

हे विशाल मातृभूमे, आपमें जो गर्मी, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसंत ये छह ऋतुये वर्षभर में होती हैं, उन उन ऋतुओं के दिन–रात सभी तरह से हमारे लिए सुखप्रद हो।

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठतम।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्।।

हे मातृभूमे, आप हमें कल्याणकारी प्रतिष्ठा से युक्त करें। हे कवे, हे देवी हमें ऐश्वर्य और विभूति में प्रतिष्ठित करते हुए स्वर्ग की प्राप्ति कराये।

सत्यंबृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथ्वी धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।

सत्यनिष्ठा, विस्तृत, यथार्थ बोध, दक्षता, क्षात्रतेज, तपश्चर्या, ब्रह्मज्ञान और त्याग–बलिदान ये भाव अथवा मातृभूमि का पालन–पोषण और संरक्षण करते है। भूतकालीन और भविष्य में होने वाले सभी जीवों का पालन करने वाली भूमि हमें विस्तृत स्थान प्रदान करे।

यस्यां पूर्वेपूर्वजना विचक्रिरे यस्यांदेवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु।।

हमारी जिस पृथ्वी में प्राचीन ऋषिओं ने अनेक प्रकार के पराक्रमी कर्म संपन्न किये हैं, जिसमें देव समर्थक वीरों ने आसुरी शक्तियों से धर्म–युद्ध किया है, जिसभूमि में गाय, घोड़े और पशु–पक्षी विशेष रूप से आश्रय ग्रहण करते हैं, ऐसी हमारी मातृभूमि हमारे ज्ञान–विज्ञान, शोर्य, तेज़, वीर्य और ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाली हो।

यस्ते गन्धः पुरूषेषु स्त्रीषु पुंसु भगो रूचिः।

यो अश्वेषु वीरेषु यो मृगेशूत हस्तिषु।
कन्यायां वर्चो यद् भूमे तेनास्माँ अपि संसृज मा नो द्विक्षत कश्चन ।।

हे मातृभूमे, वीर पुरूषों, साधारण स्त्री पुरूषों मे और हाथी, घोड़े चार पैरों वाले पशुओं में जो तेज़स्विता है तथा अविवाहित कन्याओं में आपकी जो गंध व तेज़ है, वही गंध व तेज़ हमारे अंदर भी समाविष्ट हो। हमसे कोई ईर्ष्या करने वाला न हो।

सत्यम् शिवम् सुंदरम्

सूर्यः पितामहो व्याशो वशिष्ठोअत्रिःपराशराः,
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुअंगिराः!
लोमशः पौलिशश्चौव च्यवनो भृगः,
शौनिकोअष्टादशाश्चौते ज्योतिशास्त्रः प्रवत्तरकाः!

सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, अत्री, पारासर, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पुलिश, च्यवन, यवन, भृगु, एवं शौनक ये अठारह ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक बतलाये गए है। ऋषि पाराशर जी ने उक्त अठारह आचार्यों के अतिरिक्त पुलस्त्य नाम के आचार्य जी को भी प्राचीन ज्योतिष आचार्यों में सम्मिलित किया है।

मैं अल्पबुद्धि मानव उन सभी उन्नीस प्राचीन ऋषिओं को प्रणाम करता हूँ। मैं प्रणाम करता हूँ, उन सभी आचार्यों व विद्वानों को जिनका नाम ज्योतिष के इतिहास में वर्णित नहीं हैं एवं मैं प्रणाम करता हूँ, वर्तमान के आचार्यों व ज्योतिषियों को जो इस पवित्र कार्य के द्वारा मानव सेवा में सलग्न हैं।

जो विचार प्रभु की कृपा व माँ पृथ्वी की असीम दया से मेरे मतिष्क में कुछ वर्षों पूर्व आया था, आज मैं उस विषय को समस्त विद्वानों के समक्ष भेजने का प्रयास कर रहा हूँ। यह अभी इस महत्वपूर्ण कार्य का प्रारंभिक रूप है। अतः मेरी ईश्वर व माँ पृथ्वी से विनम्र प्रार्थना है, कि मेरे ऊपर कृपा दृष्टि बनायें रखें, ताकि मेरी लेखनी अनवरत चलती रहें।

हे परंब्रह्म परमात्मा, आप के द्वारा रचित समस्त प्रकृति और आपके द्वारा संचालित ब्रह्मांडीय प्रक्रिया के

गूढ़ रहस्य आप ही जानते है, मैं तो मात्र आपकी प्रक्रिया का कण मात्र भाग हूँ। हे परंब्रह्म परमात्मा, भू–ज्योतिष विषय लेखन का उद्देश्य प्राचीन और आधुनिक ज्योतिष सिद्धान्तों का खंडन या आलोचना करना व स्वयं की अहं संतुष्टी करना, किसी भी प्रकार का कोई उदेश्य नहीं है, वरन भू–ज्योतिष विषय का उद्देश्य प्राचीन ज्योतिष पराविज्ञान को तर्क संगत, वैज्ञानिक नया व मजबूत आधार प्रदान करना है।

जैसा की सभी जानते है कि, आधुनिक ज्योतिष सिद्धान्तों में अन्धविश्वास, रुढ़िवाद, अवैज्ञानिक सिद्धान्तों के कारण ज्योतिष जैसा महत्वपूर्ण व उपयोगी ज्ञान एक तरफ गर्त में जा रहा है, तो दूसरी ओर ज्योतिष की ओट में अधिकांश ज्योतिषी जनता को गुमराह करते है। परिवर्तन प्रकृति का सिद्धान्त है। अतः सभी ज्ञान व विज्ञान के क्षेत्र में देश, काल, समय व परिस्थिती के अनुसार परिवर्तन अवश्य होते है, लेकिन ज्योतिष विषय में परिवर्तन या अनुसंधान तो दूर की बात, हमारे प्राचीन ऋषियों की धरोहर को भारतीय लोग जीवित रखनें में असफल सिद्ध हो रहे है।

अतः ज्योतिष ज्ञान के पतन को रोककर, प्राचीन व आधुनिक ज्योतिष सिद्धान्तों, नियमों में सुक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन कर, आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर उचित, पूर्ण व सही ज्ञान तैयार करना है, जो सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् सिद्धान्त पर आधारित हो एवं मानव समाज के साथ–साथ सभी जीवो, वनस्पतिओं के साथ–साथ समस्त प्रकृति को उपयोगी सिद्ध हो।

– आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

सत्य सदैव कड़वा होता है।

मानव समाज में जब कोई परम्परा रीती रिवाज या सिद्धान्त लगातार पुराने समय प्रचलित होता है, लेकिन कोई बुद्धिजीवी उसमें सत्यता लाने के लिए या वास्तविक सच उजागर करने के लिए प्रयास करता है तब, मानव समाज के अवचेतन मन में पुराने विचार संचित होने के कारण, नये व सही विचार को स्वीकारने में हिचकिचाता ही नहीं, बल्कि विरोध करने का भी प्रयास करता है। जैसे– प्राचीन मान्यता थी कि, ब्रह्मांड का केंद्र पृथ्वी है एवं सूर्य सहित समस्त ग्रह पृथ्वी का चक्कर लगाते है।

लेकिन सर्वप्रथम वैज्ञानिक एरिस्टार्कस ने लगभग 240–265 ईसा पूर्व यह बताने का प्रयास किया कि, सौरमंडल का केंद्र सूर्य है एवं पृथ्वी सहित समस्त ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते है। किन्तु आर्कमिडीज ने इस सिद्धान्त को भ्रम पूर्ण माना व सूर्य स्थिर सिद्धान्त को मान्यता नहीं मिलने दी। इसके अतिरिक्त मिस्र ज्योतिषी हिपार्कस 146–127 ईसा पूर्व जो कि, सिकंदरिया में ज्योतिष का कार्य करते थे। एरिस्टार्कस ने सूर्य स्थिर सिद्धान्त को मान्यता नहीं दी, बल्कि हिपार्कस के अनुसार पृथ्वी सौरमंडल का ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड का केंद्र बिन्दु है। इस प्रकार पृथ्वी स्थिर सिद्धान्त लगभग 1400 ईस्वी तक अटल रहा।

इसी क्रम में सर्वप्रथम कूपर्निकस ने (1472–1544) अत्यधिक साहस के साथ एक नया सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि, सौरमंडल का मुख्य पिंड सूर्य है एवं पृथ्वी सहित सभी ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते है। प्रथम बार निकोलिकस कूपरनिकस के सूर्य स्थिर सिद्धान्त को गेलीलियो व केपलर द्वारा समर्थन प्राप्त हुआ।

भू-ज्योतिष

- भू-ज्योतिष एक नई परिकल्पना व सिद्धांत, सूक्ष्मातिसूक्ष्म चिंतन व अध्ययन पर आधारित, प्राचीन व आधुनिक सिद्धांतों का समन्वय।
- जन्मकुंडली में पृथ्वी ग्रह की स्थिति का वर्णन, ज्योतिष फलादेश के समय निदान व समाधान में पृथ्वी ग्रह का महत्व।
- ज्योतिष इतिहास में प्रथम पुस्तक 'भू-ज्योतिष' जिसमें पृथ्वी का समावेश व दश ग्रहों के प्रभाव का वर्णन।

लेखक से सम्पर्क हेतु:

Email: *astro.rppatel@gmail.com*

www.bhoojyotish.com | www.bhoodharam.com

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart GET IT ON Google Play

amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-70-8

9 788119 927708